नर–नारायण की शिवोपासना*

धर्म ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। ब्रह्मा के हृदय से उनकी उत्पत्ति हुई थी। सत्य–धर्म का पालन करनेवाले धर्म ब्राह्मणरूप से विराजमान थे। धर्म ने प्रजापति दक्ष की दस कन्याओं से अपना विवाह किया तथा उनसे बहुत से पुत्र उत्पन्न किये। उन पुत्रों के नाम हरि, कृष्ण, नर और नारायण रखे गये। हरि और कृष्ण के द्वारा निरन्तर योगाभ्यास चालू रहा। नर और नारायण हिमालय पर्वत पर गये और वदरिकाश्रम नामक पवित्र स्थान में उन्होंने उत्तम तपस्या आरम्भ कर दी। ये दोनों भगवान् विष्णु के अवतार माने जाते हैं। उन दोनों ने पार्थिवलिंग बनाकर उसमें स्थित हो पूजा ग्रहण करने के लिये भगवान् शिव से प्रार्थना की। शिवजी भक्तों के अधीन होने के कारण, प्रतिदिन उनके बनाये हुए पार्थिवलिंग में पूजित होने के लिये आया करते थे।

नर–नारायण परम श्रद्धा के साथ उस लिङ्ग की षोडशोपचार से आराधना करते हुए कठिन तपस्या करने लगे। वे निराहार तथा जितेन्द्रिय होकर रात–दिन भगवच्चरण का चिन्तन करते थे, इसके अतिरिक्त और कुछ उनका व्यापार ही नहीं था।

इस प्रकार तप करते–करते बहुत समय व्यतीत हो गया। तब श्रीआशुतोष भगवान् प्रकट होकर बोले कि 'हे नर–नारायण! मैं आपलोगों की तपस्या से परम प्रसन्न हूँ। आपकी जो इच्छा हो, वह वर माँग लें।'

शंकर भगवान् के ऐसे वचन सुनकर नर और नारायण ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि 'हे देवेश! हे जगन्निवास! यदि आप हमारे ऊपर प्रसन्न हैं तो यही वर दीजिये कि आपका इस तीर्थ में सदा निवास हो और आप अपने रूप से इस क्षेत्र में रहते हुए भक्तों की पूजा स्वीकार कर उन्हें संसार–बन्धन से मुक्त करें।' भगवान् सदाशिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और ज्योतिस्वरूप होकर स्वयं उस तीर्थ में निवास करने लगे।

यह ज्योतिर्लिङ्ग केदारेश्वर के नाम से विख्यात हुआ। उस स्थान पर जाकर अनेक देवता तथा असंख्य मुनियों ने भगवान् की आराधना की और अभिलषित फल पाया।

एक बार पाण्डवलोग इस पवित्र बदरिकाश्रम में गये। भगवान् शिव ने उन्हें वहाँ देखा तो माया से महिष का रूप धारण कर लिया और वहाँ से चलने लगे, परंतु पाण्डवों ने भगवान् को पहचान लिया और उन्हें पकड़कर परम भक्तिपूर्वक स्तुति की। उनकी भावमयी स्तुति सुनकर भक्तवत्सल भगवान्

---

* नर–नारायण की शिवोपासना का उल्लेख अनेक ग्रन्थों जैसे शिवपुराण, स्कंदपुराण एवं महाभारत में पाया जाता है। इस पुस्तक के 'भगवान् शंकर एवं लिङ्गार्चन का महात्म्य' शीर्षकवाले लेख में भी नर–नारायण की शिवोपासना का विस्तृत वर्णन किया गया है। पाठक यहाँ देख सकते हैं।

प्रसन्न हो गये और अपना रूप धारण कर प्रकट हुए। भगवान् ने कहा कि 'मैं तुम लोगों से बहुत प्रसन्न हूँ, तुम्हें जो वर माँगना हो माँगो।' पाण्डवों ने भगवान् की स्तुति करके उनसे अनेक वर प्राप्त किये और संसार में अनेक प्रकार के सुख भोगकर अन्त में परमपद को प्राप्त किया।

इन केदारेश्वर के दर्शनों के लिये अब भी असंख्य स्त्री-पुरुष जाते हैं। योगियों की सिद्धि का तो यह प्रधान स्थान है। यहाँ पर पिण्डदान करने से पितरों का उद्धार होता है। इनके पूजन का माहात्म्य स्कन्दपुराण में इस प्रकार लिखा है-

यः पूजयति केदारं स गच्छेच्छिवमन्दिरम्।
तस्मिंस्तीर्थे नरः स्नात्वा पित्ऋृनुद्दिश्य भारत।
ददाति श्राद्धं विधिवत् तस्य प्रीताः पितामहाः।।

(स्कं. पु. आव. खं., रेवाखण्ड/183/16)

(उपर्युक्त लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के शिवांक, शिवोपासनांक, तथा संक्षिप्त देवीभागवत पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्ने चापराह्निकम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतं वास्य न वा कृतम्।।

(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक नागरखण्ड उत्तरार्ध 221/18 पृ. 932)

मनुष्य को चाहिये कि वह कल का काम आज ही कर ले; जो कार्य अपराह्न में किया जानेवाला हो, उसे पूर्वाह्न में ही कर ले। क्योंकि मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती है कि इस मनुष्य का कार्य पूरा हो गया है या नहीं।